GSEB Std 9 Hindi Textbook Solutions Chapter 14 युग और मैं

Std 9 GSEB Hindi Solutions युग और मैं Textbook Questions and Answers

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

प्रश्न 1. प्रस्तुत कविता के रचनाकार का नाम बताईए।

उत्तर :

'युग और मैं' कविता के रचनाकार नरेन्द्र शमां है।

प्रश्न 2. गगन और धरती से क्या हो रहा है?

उत्तर :

गगन से आग के गोले बरस रहे हैं और धरती से ज्वालाएं उठ रही है।

प्रश्न 3. सात समंदर में क्या हो रहा है?

उत्तर :

सात समंदर में हिंसा की आग से पानी खौल रहा है।

प्रश्न 4. काव्य-शीर्षक का समानार्थी शब्द दीजिए।

उत्तर :

कविता और जमाना।

2. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

प्रश्न 1. बुद्धि और हाथ किस कार्य के लिए हैं.?

उत्तर :

बुद्धि का कार्य संसार के अज्ञान को दूर करके यहाँ छाई जड़ता मिटाना है। हाथों का काम बुद्धि के मार्गदर्शन में पृथ्वी को स्वर्ग की तरह सुंदर बनाना है।

प्रश्न 2. ज्ञान और पृथ्वी की कैसी स्थिति हो रही है.?

उत्तर :

ज्ञान अपनी गहराई खो रहा है। पुथ्वी दु:ख के समुद्र में डूब रही है।

प्रश्न 3. मानव की क्या स्थिति हो गयी है?

उत्तर :

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

मानव ईश्वर बनने का प्रयास कर रहा था। उसे सारी सृष्टि पर अपना नियंत्रण स्थापित करना था। परंतु आज वह सब छोड़कर अपने ही विनाश में लग गया है।

3. सविस्तार उत्तर दीजिए :

प्रश्न 1. कवि के हृदय में कैसी व्यथा है?

उत्तर :

कवि संसार में हो रहे संहार के दृश्यों को देखकर बहुत दुखी है। उसे लगता है कि ऐसी स्थिति में उसकी चिंता करनेवाला कोई नहीं है। उसकी करुण कथा को सुनने में किसी की दिलचस्पी नहीं है। कवि अपनी पौड़ा के पूंट पी लेने में ही अपनी भलाई समझता है। सारी दुनिया को दुःख में डूबो देखकर वह भी गम के समुद्र में डूब जाना बेहतर मानता है। उसे लगता है कि ऐसी स्थिति में उसका कोई भी निशाना सही बैठनेवाला नहीं है। इस प्रकार कवि के हृदय में घोर दुःख और निराशा है।

प्रश्न 2. 'युग और मैं' कविता का संदेश लिखिए।

उत्तर :

'युग और मैं' कविता में कवि ने संसार की स्थिति के संदर्भ में अपनी स्थिति देखी है। कवि कहता है कि प्रायः मनुष्य अपनी मामूली पीड़ा को भी बड़ी मानने लगता है। उसे लगता है कि उसके अस्तित्व का कोई महत्त्व नहीं है। प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि दुनिया की स्थिति देखकर मनुष्य को कभी हताश और निराश नहीं होना चाहिए। उसे आत्मविश्वासपूर्वक पूर्ण जीने का प्रयत्न करना चाहिए।

4. संदर्भ सहित स्पष्टीकरण दीजिए :

प्रश्न 1.

मानव को ईश्वर बनना था, निखिल सृष्टि वश में लानी,
काम अधूरा छोड़कर रहा आत्मघात मानव ज्ञानी।
सब झूठे हो गये, निशाने, तुम मुझसे छूटे तो क्या !

उत्तर :

प्रस्तुत पंक्तियों नरेन्द्र शर्मा की 'युग और मैं' कविता से ली गई हैं। इनमें कवि ने बताया है कि मनुष्य किस तरह अपनी प्रगति की राह से भटककर गुमराह हो गया है।

मनुष्य ने विज्ञान के क्षेत्र में अनोखी सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हैं। इन सिद्धियों के बल पर वह स्वयं को ईश्वर समझने लगा। ऐसी सिद्धियोंवाले देश सारी दुनिया पर अपना अधिकार करने के फेर में पड़ गए। उन्होंने ईश्वर बनने की राह छोड़ दी और अपना ही विनाश करने लगे। कवि कहता है कि जब सबने अपनी राह छोड़ दी तो मैं अगर भटक गया तो इसमें मेरा क्या दोष?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न 2.

जाने कब तक घाव भरेंगे इस घायल मानवता के?
जाने कब तक सच्चे होंगे सपने सब की समता के?
सब दुनिया पर व्यथा पड़ी है, मेरी ही क्या बड़ी व्यथा!

उत्तर :

प्रस्तुत पंक्तियाँ नरेन्द्र शर्मा, की 'युग और मैं' कविता से ली गई हैं। इनमें कवि ने दुनिया के भविष्य के प्रति निराशा प्रकट की है। कवि कहते हैं कि वर्तमान में संसार संहार की वृत्तियों में उलझा है। चारों ओर विध्वंस की स्थिति है। एक-दूसरे पर प्रभुत्व स्थापित करने की होड़ है। ऐसी दशा में मनुष्य की बराबरी (समता) की बातें केवल बातें ही रह जाएंगी।

जबतक संसार में शांति और भाईचारे की भावना नहीं होगी तब तक मनुष्यता का वातावरण नहीं बनेगा। बिना उसके मानव-मानव की समानता का आदर्श कभी व्यवहार में नहीं आ सकेगा। कवि कहता है कि जब सारी दुनिया गैरबराबरी की पीड़ा से परेशान है तो मैं अपनी पीड़ा की क्यों चिंता करूं?

5. विरोधी शब्द लिखिए :

प्रश्न 1.

1. **हस्ती**
2. **अंगार**
3. **समुंदर**

उत्तर :

1. नास्ति
2. ओला
3. पोखर

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द देकर उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

प्रश्न 1.

1. **अनगिनत - ……..**
2. **गगन - ……..**
3. **दुनिया - ……..**
4. **निखिल - ……..**

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

5. **तहस-नहस - …….**
6. **आपा - …….**

उत्तर :

1. अनगिनत - असंख्य वाक्य : आज अनगिनत मनुष्य बेकार हैं।
2. गगन - आकाश वाक्य : गगन में बादल छाए हुए हैं।
3. दुनिया - संसार वाक्य : दुनिया बहुत बड़ी है।
4. निखिल - संपूर्ण वाक्य : निखिल विश्व में कई अजायबियाँ हैं।
5. तहस-नहस - बर्बाद बाक्य : दंगे में सारा गाँव तहस-नहस हो गया।
6. आपा - अभिमान वाक्य : सुधीर को अपना आपा छोड़ देना चाहिए।

7. ऐसी स्थिति में आप क्या कर सकते हैं?

प्रश्न 1. जब मौत सभी को निगल रही हो? चारो ओर अत्र-तत्र सर्वत्र आग लगी हो, हुत्याएँ हो रही हों।।

उत्तर :

इन तीनों परिस्थितियों में सबसे पहले मैं 108 नंबर डायल करके पुलिस को जानकारी दे दूंगा। इसके अतिरिक्त -

जब मौत सभी को निगल रही हो - जब मौत सभी को निगल रही हो और वह मेरे बस की बात होगी तो मैं सबकी सहायता करूंगा। अगर वह मेरे बस की बात नहीं है तो भी मैं भीतर से स्थिर रहकर मेरे हिस्से में मेरा जो भी कम होगा, मैं करता रहूंगा। मैं तनिक भी विचलित नहीं हो पाऊँगा।

चारों और अत्र-तत्र सर्वत्र आग लगी हो - मेरी चारों ओर जब आग लगी हो तब सबसे पहले मैं दमकल (fire brigade) (1) को बुलाने का प्रबंध करुंगा। मेरी आसपासवाले लोगों को बुलाने का प्रबंध करूंगा। मेरी आसपासवाले लोगों को और जानवरों को बचाने में जुट जाऊँगा। जितनी भी हो सके मैं उन सबकी सहायता करने की कोशिश करूंगा। हत्याएं हो रही होंजब मेरे इर्द-गिर्द हत्याएं हो रही हों तब भी मैं हत्या को रोकने का भरसक प्रयास करूंगा। हत्याएं करनेवाले लोगों के दिलो-दिमाग को शान्त करने की कोशिश करूंगा और येनकेन प्रकारेण हत्याएं रोककर ही रहूंगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in